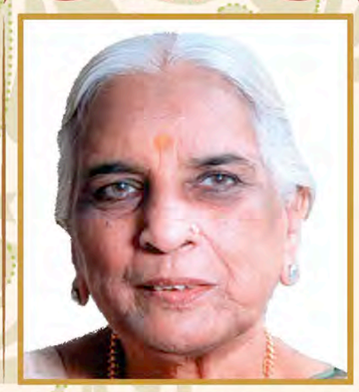

डॉ. गिरिजा देवी

Dr. Girija Devi



पद्म विभूषण

Padma Vibhushan



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

डॉ. गिरिजा देवी

डॉ. गिरिजा देवी भारत की एक महान शास्त्रीय संगीत गायिका हैं जो बनारस तथा सेनिया परंपरा से संबंधित हैं और बनारस घराना की पूरब अंग गायिकी के अंतिम महान गायकों में से एक हैं। आपको संगीत प्रेमियों तथा विशेषज्ञों दोनों से बहुत प्रशंसा प्राप्त हुई है तथा आपने अपना जीवन हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को समर्पित किया है तथा आप छः दशकों से उत्कृष्ट स्तरीय संगीत की शिक्षा प्रदान कर रही हैं। आप हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की सभी विधाओं में दक्षता के लिए प्रसिद्ध हैं जैसे खयाल, ठुमरी, दादरा, टप्पा, कजरी, होरी, चैती तथा भजन।

2. आपका जन्म 8 मई, 1929 को हुआ था तथा आपको चार वर्ष की आयु में आपके स्वर्गीय पिता श्री रामदेव राय द्वारा स्वर्गीय पंडित सरजू प्रसाद मिश्रा के संरक्षण में दीक्षा दी गई। बाद में उन्होंने अपना प्रशिक्षण स्वर्गीय श्री पंडित श्री चन्द मिश्रा के साथ जारी रखा। आपने अपने संगीत का कैरियर 1949 में इलाहाबाद से एक अखिल भारतीय रेडियो प्रसारण में एक एकल संगीत समारोह से आरंभ किया तथा आप तब से निरंतर भारत एवं विदेश में संगीत समारोहों में आमंत्रित की जाती रही हैं। आपने भारत, रूस नेपाल, फ्रांस, अमेरिका, लंदन, स्विटजरलैण्ड ब्रुसेल्स तथा कनाडा जाकर अपनी कला का व्यापक रूप से प्रदर्शन किया तथा इस अवधि के दौरान आपका संपर्क पंडित रवि शंकर तथा उस्ताद अली अकबर खान जैसे महान समकालीन कलाकारो से भी हुआ।

3. आप आई टी सी संगीत रिसर्च अकादमी की संकाय सदस्य है जो कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं उन्नति के उद्देश्य से आई टी सी लिमिटेड द्वारा स्थापित एक लोक धर्मार्थ न्यास है। आरंभ से ही आई टी सी संगीत रिसर्च अकादमी में एक गुरू होने के साथ–साथ आपका स्वयं का एक धर्मार्थ न्यास "डा. गिरिजा देवी ट्रस्ट, कोलकता" भी है। आपने आल इंडिया रेडियो के सेन्ट्रल ऑडिशन बोर्ड तथा संगीत नाटक अकादमी के सदस्य के रूप में भी सेवा प्रदान की है।

4. बनारस की पूरब अंग गायकी को आगे ले जाने में आपकी अहम भूमिका रही है जहां आपने पारंपरिक खयाल, गायकी के अतिरिक्त, ठुमरी, ठप्पा, दादरा, होली, चैती तथा झूला अन्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत विधाओं जैसी की प्रदर्शन शैलियां पुनः सृजित की हैं।

5. आप को कई पुरस्कारों एवं सम्मानों से नवाजा गया है जिसमें 1972 के पदम श्री पुरस्कार, सहित 1977 का संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 1989 का पदम भूषण, 2003 में आई टी सी पुरस्कार तथा संगीत नाटक अकादमी रत्न सदस्य (फैलोशिप) 2010, बंग सम्मान (2014), बंग विभूषण, (2015) शामिल है। आपको विभिन्न स्थानों पर संगीत सरस्वती तथा ठुमरी की रानी कहा गया है तथा आपने भारत के सात विश्वविद्यालयों नामतः महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, कोलकाता, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, सोडेपुर इंजीनियरिंग कॉलेज, कोलकाता, सपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, बनारस, प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद तथा प्राचीन कला केन्द्र, चंडीगढ़ से डी.लिट की मानद उपाधि प्राप्त की है।

Dr. Girija Devi

Dr. Girija Devi is one of India's greatest vocalists belonging to the Banaras and Senia traditions and one of the last masters of the Purab Ang gayaki of the Banaras Gharana. Acclaimed by music enthusiasts and connoisseurs alike, she has dedicated her life to the cause of Hindustani Classical Vocal music, performing and teaching at the highest level of musical excellence, for six decades. She is renowned for her amazing proficiency in all the vocal forms of northern India, Khayal, Thumri, Dadra, Tappa, Kajri, Hori, Chaiti and Bhajan.

2. Born on 8th May, 1929, Dr. Girija Devi was initiated into music by her father Late Shri Ramdeo Rai at the age of four, under the tutelage of Late Pandit Sarju Prasad Mishra. She later continued her training with Late Pandit Srichandra Mishra. She started her musical career with a solo concert in 1949 at an All India Radio broadcast from Allahabad and has been a constant invitee to concerts in India and abroad since. She travelled all over India, Russia, Nepal, Franca, America, London, Switzerland, Brussels and Canada where she performed extensively, during which time she interacted with other great contemporary artists like Pandit Ravi Shankar and Ustad Ali Akbar Khan.

3. Dr. Girija Devi is a faculty member and Guru of ITC Sangeet Research Academy, a public charitable trust established by ITC Limited with the objective of preserving and promoting Indian Classical Music. Apart from having been a Guru of ITC Sangeet Research Academy since its inception, she runs her own charitable trust, 'Dr. Girija Devi Trust', Kolkata. She has served as a member of the Central Audition Board of AIR and Sangeet Natak Akademi, Delhi.

4. Dr. Girija Devi has been instrumental in taking forward the Purab Ang Gayaki of Benaras, where she has recreated rendition styles of other North Indian classical forms like Thumri, Tappa, Dadra, Holi, Chaiti and Jhoola apart from the traditional khayal gayaki. He research on the importance of poetry, lyrics and the various Rasas have been identified as one of the many highlights of her performances. She has served as a member of the Central Audition Board of AIR.

5. Dr. Girija Devi has been heaped with awards and accolades, including the Padma Shri in 1972, the Sangeet Natak Akademi Award in 1977, the Padma Bhushan in 1989, the ITC Award in 2003 and the Sangeet Natak Akademi Ratna Sadasya (Fellowship) in 2010, Banga Samman (2014), Banga Bibhushan (2015) and Padma Vibhushan in 2016. Variously described as Sangeet Saraswati and the Queen of Thumri, she is an honorary DLitt from as many as seven universities in India namely, Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth, Banaras; Rabindra Bharati University, Kolkata; Indira Gandhi National Open University, Allahabad; Sodepur Engineering College, Kolkata; Sampuranan Sanskrit University, Banaras; Prayag Sangeet Samiti, Allahabad and Prachin Kala Kendra, Chandigarh.